

---

# Dakshinamurti Stotram

---

## दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्

---

### Document Information

---

Text title : Dakshinamurti Stotram 4

File name : dakShiNAmUrtistotram4.itx

Category : shiva, stotra

Location : doc\_shiva

Author : Samara Pungava DheekshithEndra

Transliterated by : Nagoji nagojip gmail.com

Proofread by : Dr. N. Veezhinathan

Description-comments : Yatra prabhandham book by Samara Pungava DheekshithEndra

Latest update : September 8, 2020

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 9, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्



आधिक्यमस्मात् जगतः आधिगन्तुं  
विश्वादिकोक्तेः विषयं प्रपद्ये ।

आद्यक्षणातङ्कनिवर्तनाय  
प्रसूतिमत्तारहितम् प्रपद्ये ॥ १ ॥

कालग्रहग्राहभयापनुत्यै  
कृतान्तशिक्षाकृतिनं प्रपद्ये ।

शृङ्गारभूजुम्भणवारणाय  
प्रसून कोदण्ड रिपुं प्रपद्ये ।

विनेतुमार्तिं विषयाध्व जन्यां  
वटद्रुमाधोवसतिम् प्रपद्ये ॥ २ ॥

मोहातिरेकस्मयमोषणाय  
पादादितापस्मरणं प्रपद्ये ।  
कर्माटवीपाटन कौतुकेन  
पाणौ विराजत्परशुम् प्रपद्ये ॥ ३ ॥

विशुद्धविज्ञानविकासहेतोः  
प्रबोधमुद्राभरितम् प्रपद्ये ।  
तापत्रयाटोपसमापनाय  
प्राण्यधामाभरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

वैमल्यसम्पादनवाञ्छया अहं  
मन्दाकिनीमाल्यधरं प्रपद्ये ।  
प्रसादलाभं परमीहमानः  
मुग्धस्मितोल्लासिमुखं प्रपद्ये ॥ ५ ॥

व्यथामशेषां अपनेतुकामः  
नाम्ना मृडम् नाथमहम् प्रपद्ये ।

अनाद्यविद्याशमनं प्रपद्ये this line was composed by Maha Swamigal  
नाम्ना महिम्ना अपि च शङ्करं त्वाम् ॥ ६ ॥

सर्वज्ञतासारभूतं प्रपद्ये  
निस्सीमसौहित्यनिधिं प्रपद्ये ।  
अनादिबोधायतनं प्रपद्ये  
स्वतन्त्रतायाः सदनं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

हरं प्रपद्ये अहं अलुप्तशक्तिं  
अमेयसामर्थ्यमहं प्रपद्ये ।  
शिवं प्रपद्ये जनकं विधातुः  
ईशं हृषीकेशगुरुं प्रपद्ये ॥ ८ ॥

गवं प्रपत्तिं ईशानं तन्वते तत्त्वदर्शिनः ।  
तत्कृतुन्यायरसिकाः तत्तादृशफलाप्तये ॥ ९ ॥  
नमः श्री दक्षिणामूर्तये ।

इति समरपुङ्गवदीक्षितेन्द्रविरचितं दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Source: yAtrAprabandha by samarapungavadIkShitendraH

---

—  
*Dakshinamurti Stotram*

pdf was typeset on September 9, 2020

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

